thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

युग प्रवर्तक
ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज क्या है ?

- घोर निद्रा में सो रही मनुष्य जाति का आर्य समाज चौकीदार है।
- रोगग्रस्त मनुष्य जाति का आर्य समाज डाक्टर है।
- विधवा, अनाथों, दलितों, गौ आदि पशुओं का वकील है।
- दु:खियों और पीड़ितों का सहायक है। ईश्वर उपासना, संध्या हवन–यज्ञ एवं वेद का प्रचारक है।
- जहालत, अविद्या, अंधविश्वास, कुरीतियों को दूर करने वाला है।
- सारे संसार (पशु पक्षियों तक) का उपकारक है।
- पंचयज्ञ, सोलह संस्कार, वर्ण व्यवस्था (जन्म से नहीं, गुण, कर्म, स्वभाव से) चार आश्रमों को पुनः प्रचलित करके सभी पुरूषों को देवता के रूप में देखने का इच्छुक है।
- हमारे पूर्वजों पर मिथ्या दोष लगाने वालों को ललकारने वाला है।
- केवल एक ईश्वर (जिसका मुख्य नाम ओ३म् है) का उपासक है।
- कोई स्त्री पुरूष जो आर्य समाज के दस नियमों को स्वीकार करे, आर्य समाज का सदस्य हो सकता है।
- गौवंश की रक्षा तथा वृद्धि एवं भूल से जो भाई मुसलमान अथवा ईसाई बन गये हैं उनको पुनः शुद्ध कर भारतीय स्वराज्य की नींव सुदृढ़ करना प्रत्येक देशभक्त का प्रथम कर्त्तव्य है।

नहीं चाहता कोई लड़ना किसी से, किसी को मारना अथवा स्वयं मरना किसी से,
नहीं दु:शान्ति को भी तोड़ना नर चाहता है, जहां तक हो सके निज शांति प्रेम निवाहता है,
मगर यह शांति प्रियता रोकती केवल मनुज को, नहीं यह रोक पाती है दुराचारी दनुज को।
दनुज क्या शिष्ट मानव को कभी पहचानता है, विनय को नीति सदा कायर की वह मानता है।

–उपरोक्त शिक्षा कुरूक्षेत्र के मैदान में कविवर मैथलीशरण गुप्त के शब्दों में पितामह भीष्म, युधिष्ठिर एवं उनके भाईयों को उपदेश रूप में देते हुए महाभारत के युद्ध के विनाश के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कह रहे हैं।

नव ईस्वी सन् २०१५ आर्य वन्दना के सभी पाठकों के लिए मंगलमय हो।

यह अंक आर्य समाज मण्डी के सहयोग से प्रकाशित किया गया
तथा आगामी अंक आर्य वन्दना कोष के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ८६वां विक्रमी सम्वत् २०७१ सृष्टि सम्वत् १६६०८५३११५ जनवरी २०१५

thearyasamaj.org

प्रार्थना

♦रवीन्द्र नाथ टैगोर

विपत्तियों में मेरी रक्षा करो, यह नहीं मेरी प्रार्थना,
विपत्ति में मैं भयभीत न होऊँ, यही मेरी प्रार्थना।

दुःख औ संताप से मेरा चित्त व्यथित हो जाय,
तब भले ही सान्त्वना न दो,
किन्तु दुःख पर विजय पा सकूँ, यही मेरी प्रार्थना।

मुझे मदद न मिले तो कोई बात नहीं
किन्तु बल मेरा टूटे नहीं,
संसार में मेरा नुकसान हो जाए
सिर्फ वंचना ही मुझे मिले

तो तेरा मन उसे हानि न समझे, यही मेरी प्रार्थना।

मुझे तुम उबारो.....यह नहीं मेरी प्रार्थना
किन्तु तैर सकने का बाहुबल मुझे दे दो–
यही मेरी प्रार्थना।

मेरा बोझ हलका करके चाहे मुझे सान्त्वना न दो
किन्तु भार वहन कर सकूँ, यही मेरी प्रार्थना।

सुख के दिनों में नम्र रहकर तुम्हारा मुख पहचान सकूँ
दुःख की रातों में, जब सारी दुनिया छले मुझे
तब भी तुम तो साथ हो ही,
इसमें मुझे कभी संशय न हो–
यही मेरी प्रार्थना।

मर्यादाएं

समाज में मनुष्य अपराध से तीन प्रकार से बचता है। पहला जो व्यक्ति विवेकशील समझदार होता है। जिसके पास उचित–अनुचित को जानने–पहचानने की योग्यता होती है, वह अच्छे कार्यों को करता है और बुरे कार्यों से बचता है। ऐसे व्यक्तियों की संख्या समाज में बहुत थोड़ी होती है या कहना उचित होगा कि ऐसे व्यक्ति नगण्य होते हैं। दूसरे लोग जो समाज में बड़ी संख्या में होते हैं जो कानून से डरते हैं, समाज में जिनको अपनी प्रतिष्ठा जाने का भय सताता है, समाज के नब्बे से निन्यानवे प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जो अपने सम्मान के जाने के भय से बुरे कार्यों से बचते हैं। उन्हें समाज में लज्जित न होना पड़े इसलिए अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित करके अनुशासन का पालन करते हैं। समाज में तीसरे प्रकार के लोग वे होते हैं जो दण्ड या जेल, फांसी के भय से नियम कानून का पालन करते हैं। उनको यदि ऐसा प्रतीत हो कि कानून से बचा जा सकता है चाहे इसके लिए रिश्वत देनी पड़े, सिफारिश करनी पड़े, फिर ऐसे लोग अपराध करने में अग्रसर होने लगते हैं। समाज में ऐसे लोगों के कारण अपराध करने पर मिलने वाले दण्ड का भय कम होने लगता है और अपराधी समाज में बढ़ने लगते हैं, जिनके कारण समाज की मर्यादाएँ टूटने लगती हैं। यही स्थिति आज हमारे समाज में उत्पन्न हो गई है।

–धर्मवीर

(साभार : पाक्षिक परोपकारी)

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, संरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

संसार में वेदों का डंका बजाने वाले भगवावस्त्रधारी ऋषिवर दयानन्द ने समाज के उत्थान हेतु स्त्री शिक्षा एवं दलितोद्धार पर विशेष जोर दिया। स्वामी जी महाराज ने माता–पिता और गुरू को समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आह्वान किया। स्वामी जी के अनुसार एक सदाचारी माता और चरित्रवान पिता तथा आदर्श गुरू ही समाज को नई दिशा देकर समाज की बिगड़ती दशा को संवार सकता है। उनके अनुसार बिगडते हुए समाज की दशा को उत्तरदायित्व पूर्ण एवं मुख्य रूप से इन तीनों पर ही निर्भर करता है। माता, पिता एवं गुरू यदि गुणों की खान है तो परिवार में सुख, शांति और समृद्धि की वर्षा होती रहेगी। यदि माता, पिता और गुरू का आचरण बिगड़ा है तो उनके चरण छूने से और आशीर्वाद लेने से कौन सा महाकुम्भ में हम गोता लगाकर अपने ताप और संताप को दूर कर पायेंगे। उन पूर्वजों को अपनी संतानों को नशे की लत से दूर रहने का आदेश करने का कोई अधिकार नहीं है जो सिर से पैर तक आकण्ठ व्यसनों की दल–दल में डूबे हैं। हम यह तो चाहते हैं कि हमारी संताने परोपकारी और निरोगी बनें और मादक पदार्थों के सेवन से कोसों दूर रहें। जबकि बहुत से बुजुर्ग इन व्यसनों को अपने जीवन का आभूषण समझ करके गले लगा रखते हैं। इससे अधिक शर्मनाक बात और कोई नहीं है। हमारे प्रधानमन्त्री रात–दिन जनता को खैनी, चरस, भांग, शराब आदि मादक पदार्थों से दूर रहने की प्रेरणा 'मन के विचार' नामक कार्यक्रम में देते रहे हैं। जिससे हमारी संतानों का चरित्र ऊपर उठे और वे जीवन में १०० से अधिक आयु तक सुन्दर, स्वस्थ और निरोगी जीवन व्यतीत करें। क्योंकि स्वास्थ्य के सम्बन्ध में किसी कवि द्वारा वर्णित यह पंक्तियां अत्यन्त सुन्दर हैं :

स्वास्थ्य ही संसार में सारे सुखों का मूल है,
स्वास्थ्य की अवहेलना करना यह बड़ी भूल है,
स्वास्थ्य के बल की बदौलत घर रहे धन से भरा,
जीवन विटप नर का सदा ही स्वास्थ्य रखता है हरा।

हमें अपने संस्कारों और विचारों के अमूल सुधारों हेतु अपने पूर्वजों के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। जिन के सम्बन्ध में कविवर गुप्त जी का कहना है :

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिये जीते न थे,
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
अपने लिये वे दूसरों का हित कभी हरते न थे,
चिन्ता प्रपूर्ण अशान्ति पूर्वक वे कभी मरते न थे।
उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है,
गाते नहीं उन्हीं के गुण हम, गा रहा संसार है।
वे धर्म पर करते न्यौच्छावर तृण समान शरीर थे,
उनसे वही गम्भीर थे, वरवीर थे, ध्रुवधीर थे।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे, निवारक शोक के,
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जो आधुनिक युग के वेदों के भाष्यकार माने जाते हैं उन्होंने मानव जाति के समग्र उत्थान हेतु महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया। स्वामी जी के समय में पाठशालाओं में शिक्षा हेतु बालिकाओं का पढ़ना बर्जित था। यह स्वामी जी ही थे जिन्होंने बालिकाओं के पठन–पाठन हेतु समग्र व्यवस्था करके महिलाओं के गौरव को चार–चांद लगाए। स्वामी जी के युग में आर्य समाज की संस्थाओं में महिलाओं का पठन–पाठन कराकर स्वामी जी ने उनकी दशा को सुधारने में भरपूर योगदान दिया। आज ऋषिवर दयानंद और महात्मा हंसराज जैसी विभूतियों के श्रम एवं योगदान से महिला शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ। आज गुरूकुलों से निकली हुई महिलाएं बड़े–बड़े शास्त्रार्थ करके समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह महर्षि दयानंद के प्रयत्नों का कमाल और धमाल है कि समाज के हर क्षेत्र में आज महिलाएं पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं।

एक बार ऋषि दयानंद अपने भक्तों के साथ एक मन्दिर के पास से गुजर रहे थे। उन्हें देखकर एक भक्त ने धीरे से उनके कानों में कहा कि स्वामी जी आप मूर्ति पूजा के विरोधी हैं लेकिन जब कभी कोई मन्दिर सामने आ जाता है तो आपका सिर स्वतः ही झुक जाता है। स्वामी जी ने अपने अनुयायियों से वापस चलने को कहा। उन्होंने एक बालिका को जो जीर्ण–शीर्ण वस्त्रों में थी, को खेलते हुए देखा। उन्होंने उस पण्डित को इशारा करते हुए कहा कि मैंने तो इस मातृ शक्ति को देखकर अपना शीश झुकाया है, मन्दिर की मूर्तियों से मुझे कुछ भी लेना–देना नहीं है। आज ऋषिवर दयानन्द का स्वप्न साकार हो रहा है। भारत की देवियां बढ़–चढ़ कर समाज के हर क्षेत्र में योगदान दे रही हैं। इस सम्बन्ध में मैथिलीशरण गुप्त जी ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है :

'निज स्वामियों के कार्यों में समभाग जो लेती न वे,
अनुराग पूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे,
तो फिर कहाती किस तरह अर्धांगिनी सुकुमारियाँ,
तात्पर्य यह अनुरूप ही थी नरवरों की नारियाँ।

आज राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान देखने को मिल रहा है। महर्षि दयानंद के सपने साकार होते दिखाई दे रहे हैं।

–कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

दयानन्द मठ चम्बा–१७६३१० (हि० प्र०)

प्रबन्धक :
आचार्य महावीर सिंह
एम. ए. आयुर्वेद रत्न

E.mail : dayanandmathcba@gmail.com
risshhhi@gmail.com
फोन : 01892-222871

अध्यक्ष :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

प्रिय आत्मीय जनों,

सादर सप्रेम नमस्ते।

ईश्वर आप सभी को कुशलपूर्वक रखें। बस यही कामना है। चिरकाल के बाद पुनः आप लोगों को पत्र भेज रहा हूँ। पूज्य स्वामी जी महाराज के ठीक रहते मैं भी निश्चिंत हो जाता हूँ। आप लोगों से स्वामी जी महाराज सम्पर्क साधते रहते थे, वर्तमान में स्वामी जी महाराज की अस्वस्थता की स्थिति में, आप लोगों को पत्र लिख रहा हूँ। पत्र द्वारा उनकी अस्वस्थता का समाचार भी आप लोगों को प्रेषित कर रहा हूँ। यद्यपि पीछे काफी समय से स्वामी जी महाराज पूर्ण रूप से ठीक नहीं हो पाए, अस्वस्थ ही चल रहे थे, पर उत्साह की अधिकता व अत्याधिक आत्मसंबलता के कारण अपने दैनिक कार्यों के साथ–साथ आप लोगों के साथ पत्रों एवं दूरभाष के द्वारा सम्पर्क साधते रहते थे। शरीर की जर्जरता की स्थिति में भी आत्मबल में न्यूनता नहीं रही। इसी के परिणाम स्वरूप कष्ट साध्य दुर्लभ शारद यज्ञ को इस वर्ष भी प्रतिवर्षों की भांन्ति सुखपूर्वक विधिवत रूप से सम्पन्न किया गया। पर वर्तमान में अचानक शरीर में शोजिस आनी शुरू हो गई। पेट पत्थर के समान फूलकर सख्त हो गया। चैकअप हेतु जालन्धर गए। डॉक्टर ने दवाई दी और कहा सब ठीक है। फिर लीवर व किडनी स्पैस्लिस्ट को दिखाने अम्बाला गये। वहां लीवर में कोई गड़बड़ी पाई गई। दवाई शुरू की तो शोजिस और ज्यादा बढ़ गई। पेट में और भी भारापन हो गया। शोजिस पांव व पेट से ऊपर चढ़कर मुंह तक पहुंच गई। अम्बाला से पुनः जालन्धर पटेल हास्पिटल में डॉक्टर को दिखाने गये, वहां डॉक्टर ने उनकी हालत देखी तो चार–पांच दिनों के लिए दाखिल कर दिया। इस समय स्वामी जी पटेल हास्पिटल में दाखिल हैं। स्वास्थय में अभी सुधार नहीं हुआ। प्रिय ऋषि–स्वामी जी की सेवा में लगे हुए हैं। अब तक स्वामी जी आप सभी के लिए अपनी तपस्या, अपनी साधना की पूंजी को विसर्जित करते रहे। अब वे सर्वथा खाली हैं। अब मेरा आप लोगों से अनुरोध है कि आप सभी लोग पूज्य स्वामी जी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएं एवं मंगलकामनाएं प्रेषित करें, इस समय आप सभी के सहयोग की हमें महती आवश्यकता है। कृपया सहयोग की लाईन में बनें रहें। ईश्वर आप सभी का कल्याण करे।

विनीत
आपका अपना ही
आचार्य महावीर सिंह

अपील

आर्य वन्दना परिवार के सम्पादक कृष्ण चन्द आर्य, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक विनोद स्वरूप तथा माया राम ने आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. के मुख्य संरक्षक स्वामी सुमेधानन्द जी के बिगड़ते स्वास्थ्य पर गंभीर चिन्ता करते हुए, कहा कि स्वामी जी रात–दिन आर्य समाज के कार्य में व्यस्त रहा करते हैं। डॉक्टरों के अनुसार उन्हें आराम की अति आवश्यकता है। स्वामी जी अपने मनोबल के कारण महर्षि दयानन्द मठ चंबा की गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। देश व विदेश में भी उन्होंने अपनी कार्यदक्षता के कारण महान यश प्राप्त किया। प्रभु उन्हें शीघ्र ही स्वास्थ्य प्रदान करें ताकि वे पूर्ववत समाज सेवा में व्यस्त रहें। कृष्ण चन्द आर्य ने प्रदेश के सभी आर्योजनों को स्वामी जी के उपचार हेतु आर्थिक सहयोग हेतु मदद करने की अपील की। आप यह राशि मठ के खाता संख्या 1420000100027191 (पंजाब नेशनल बैंक, आई. एफ. एस. सी. कोड : PUNB0142000) में जमा करवा सकते हैं। –सम्पादक

thearyasamaj.org

''राष्ट्रभाषा व प्रान्तीय भाषाओं के विकास में बड़ी बाधक: अंग्रेज़ी''

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत तेलुगु लेखक डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने दो वर्ष पूर्व एक पत्रिका 'मिलिन्द' की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर बोलते हुए यह कहा था कि प्रान्तीय भाषाओं के विकास से ही राष्ट्रभाषा का विकास सम्भव है परन्तु उन्होंने यह बताने का साहस पूर्ण कर्त्तव्य नहीं निभाया था कि प्रान्तीय भाषाओं के विकास–मार्ग में बाधक कौन है ?

पूरा राष्ट्र जानता है कि प्रान्तीय भाषाओं को राष्ट्रभाषा का भय दिखाकर विगत ६६ वर्षों से विदेशी भाषा का साम्राज्य दृढ़ता से स्थापित किया गया है जबकि हिन्दी का जन्म इस देश की स्वतन्त्रता के हथियार के रूप में हुआ था। इसने देश को स्वतन्त्र कराया तथा अंग्रेजों को यहाँ से खदेड़ा परन्तु अंग्रेज़ी परस्त नेताओं व नौकरशाहों के अंग्रेज़ी–प्रेम ने हिन्दी को हाशिये पर पहुंचाने में मुख्य भूमिका निभाई। इस सम्बन्ध में अंग्रेज़ों के ही देश की एक रेडियो सेवा 'बी.बी.सी' को महात्मा गांधी का १५ अगस्त, १९४७ ई. को दिया यह संदेश स्मरणीय है–

''जाओ और दुनियाँ को बता दो कि गांधी अब अंग्रेज़ी जानता नहीं। यदि मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज से विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा को बन्द करा दूँ। सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरन्त बदलवा दूँ अन्यथा बर्खास्त करा दूँ।'' उन्होंने यह भी कहा था : ''अब हम समाज व राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा जो कर सकते हैं, वह यही है कि हमने जो भ्रम व अन्ध विश्वासपूर्ण मान्यता पाल रखी है, इससे अब स्वयं मुक्त हो जाएँ व राष्ट्र को भी मुक्त करें कि सर्वोत्तम विचार व सर्वोत्कृष्ट प्रतिभा का प्रकटीकरण अंग्रेज़ी के द्वारा ही किया जा सकता है। वस्तुतः कोई विदेशी भाषा नौजवानों पर थोपने से उनकी स्वाभाविक प्रतिभा कुंठित व लुंठित हो रही है तथा इसे विदेशी शासन की सबसे बड़ी बुराई ही माना जाएगा। यदि विदेशी माध्यम से शिक्षा देना इसी प्रकार जारी रहा तो इससे राष्ट्र की आत्मा का हनन होगा।''

महात्मा गांधी के इन विचारों को केवल अनेक कथित भक्तों ने ही नहीं, राष्ट्रीय व प्रान्तीय नेताओं ने भी हाशिए में डालकर अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखा है। प्रान्तीय भाषाओं को ही नहीं, प्रान्तीय बोलियों को भी उकसाकर हिन्दी को उनका विरोधी सिद्ध करने का दुष्कर्म चलता रहा है। सत्य इसके विपरीत है। संस्कृत रूपी माता की सभी बेटियाँ हैं–हिन्दी, मराठी, मलयालम, गुजराती, पंजाबी, उड़िया, बंगला, तेलुग आदि भाषाएं। संस्कृत के इनमें से किसी भाषा में लगभग ५० प्रतिशत शब्द हैं, तो किसी में ६० प्रतिशत शब्द विद्यमान हैं। परस्पर क्रिया–भेद अवश्य है। एक भी उदाहरण ऐसा नहीं है, जब हिन्दी ने किसी प्रान्तीय भाषा की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध किया हो। हिन्दी अपनी माँ संस्कृत की बड़ी बेटी है व वह अपनी बहनों से विवाद क्यों करेगी ? शताब्दियों से ये सह–अस्तित्व के नियम का पालन करती रही है। इन सबकी उन्नति में बड़ी बाधा अंग्रेज़ी है। यदि अंग्रेज़ी की अनिवार्यता देश भर में समाप्त कर दी जाए तो केन्द्रीय स्तर पर हिन्दी व प्रान्तीय स्तर पर प्रान्तीय भाषाएँ स्वतः अपना उचित स्थान पाकर रहेंगी। एक प्रान्त के व्यक्ति को दूसरे प्रान्त में जाकर तत्रस्थ लोगों से जोड़ने वाली हिन्दी के सिवा कोई अन्य भाषा नहीं है। अतः इसे प्रान्तीय भाषाओं का विरोधी नहीं, सहायिका ही माना जाता रहा है।

हिन्दी इस देश की सर्वजनीन भाषा है व इसे लागू करने का वचन महात्मा गांधी सहित अन्य कई नेताओं ने स्वतन्त्रता पूर्व दिया था। लोकतन्त्र की ताकत उसकी अपनी भाषाओं की उन्नति में निहित है परन्तु अधिक नेता अपने वचन को भंग करने में व्यस्त हो गए व हमारा लोकतन्त्र अंग्रेज़ी की मुट्ठियों में आज कैद होकर फड़फड़ा रहा है। यह एक टकसाली सत्य है कि हमें यह विश्वास दिया गया था कि आम आदमी की सत्ता में भागीदारी से, लोकतन्त्र–व्यवस्था लागू होते ही हिन्दी को स्वयमेव पंख लग जाएंगे। परन्तु इसके पंख कुतरने की अप्रत्यक्ष योजना तो उसी दिन बन गई थी जिस दिन संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने का प्रस्ताव पारित किया था। प्रसिद्ध राष्ट्रभक्त नेता बलराज मधोक के अनुसार सभा से बाहर निकलते हुए तत्कालीन शिक्षा मन्त्री मौ. अब्दुल आज़ाद ने साथ चल रहे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् व राष्ट्रभक्त डॉ. रघुवीर को यह कहा था कि ''संख्या बल से तो तुम लोगों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करा लिया है परन्तु इसे लागू करने का दिन न देख पाओगे।'' यह कथन सत्य सिद्ध हो गया है तथा आज स्थिति यह है :

अफ़सर व नेता हो गए अंग्रेज़ी के दास।
हिन्दी अब तक काटती घर में ही वनवास।

यदि नेतागण ईमानदारी से लोकतन्त्र की शक्ति–जनता के प्रति समर्पित रहते तो हिन्दी देश में ही नहीं, पूरे विश्व में आज राज करती हुई दिखाई देती। संसार भर में बोली जाने वाली मुख्य भाषाओं में हिन्दी का स्थान द्वितीय है। भारत से छोटे देशों की भाषाएँ राष्ट्रसंघ में स्थान पा गई हैं। परन्तु हम दस बार विश्व हिन्दी सम्मेलनों में इच्छा व संकल्प प्रकट कर

thearyasamaj.org

चुकने के बावजूद राष्ट्रसंघ में हिन्दी को स्थान नहीं दिला सके। क्योंकि 'अंजुम' के शब्दों में –

हिन्दी तेरे देश में यह किसकी जयकार,
पटरानी को भूलकर, नगर वधू से प्यार।

इसके कुछ कारणों पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। एक कारण यह है कि यह प्रचारित किया गया है कि अंग्रेज़ी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। यह कथन सर्वथा झूठ है। वास्तविकता यह है कि अंग्रेज़ी मात्र इंग्लैण्ड, अमेरीका, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया व हॉलैण्ड की ही भाषा है। शेष सभी देश अपनी–अपनी भाषा से काम चलाते हैं व अपनी भाषा के बल पर ही जीवित रहे हैं। ऐसे देशों में रूस, चीन, जर्मन, जापान, इस्रायल व फ्रांस आदि देशों ने अंग्रेज़ी के बिना विश्व में अपनी वैज्ञानिक, शैक्षणिक, राजनैतिक व आर्थिक ध्वजा फहराई है। ऐसा ये देश कर सकते हैं तो आधुनिक वैज्ञानिकों व भाषा–शास्त्रियों द्वारा संसार की सर्वश्रेष्ठ व वैज्ञानिक लिपि देवनागरी व प्राचीन वैदिक संस्कृतिवाहक संस्कृत–भाषा व इसके विश्वव्यापी व्याकरण एवं वैज्ञानिक स्वरमाधुर्यता का दिग्दर्शन कराने वाला भारतवर्ष क्यों नहीं कर सकता ? दूसरा निवेदन हमारा यह है कि विश्व में हिन्दी भाषियों की संख्या ३० प्रतिशत है जबकि अंग्रेज़ी भाषा विश्व में १३ प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। पूरे विश्व की जनसंख्या इस समय ७ अरब है। इसमें चीन देश की जनसंख्या लगभग पौने दो अरब है। वह अपनी भाषा का प्रयोग अपने ही देश में करते हैं व चीन ने राष्ट्रसंघ का सदस्य बनते ही अपनी भाषा को राष्ट्रसंघ में कार्य करने की मान्यता प्राप्त करा ली है। इसके विपरीत हिन्दी भारत के बाहर के नेपाल, मॉरिशस, भूटान व फ़िजी आदि २० देशों में प्रचलित है। यह क्यों नहीं राष्ट्रसंघ में स्थान पा सकी ? फ्रैंच भाषी लोग संसार में ५ प्रतिशत, स्पेनी ६ प्रतिशत व रूसी ८ प्रतिशत हैं। उन्होंने अंग्रेज़ी के अन्तर्राष्ट्रीय होने के कथित दावे के बावजूद अपने देशों में अंग्रेज़ी को पसरने नहीं दिया। लगभग ६ करोड़ अरबी भाषियों ने राष्ट्रसंघ में अरबी को प्रयोग होने वाली छठी भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करके ही चैन लिया है। इस सम्बन्ध में हमारा एक निवेदन यह भी है कि अन्तर्राष्ट्रीय बनने से पूर्व हमें राष्ट्रवादी बनना होगा। जो राष्ट्रवादी न बन सका, वह कभी अन्तर्राष्ट्रवादी भी न बन सकेगा। बहस के लिए हम थोड़े समय के लिए मान लेते हैं कि अंग्रेज़ी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है तो हमारा प्रश्न यह होगा कि विदेशी परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने के कारण हमने अंग्रेज़ी को ग्रहण करना ही है तो हमें बताया जाए कि क्यों विदेशी परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय शासकों (=अंग्रेज़ों) को हमने अपने देश से निकाला था ? उनके राज्य में तो सूर्य कभी न डूबता था अर्थात् उनका शासन संसार में बहुत अधिक देशों पर चलता था। वे तो अन्तर्राष्ट्रीय शासक थे।

इस सम्बन्ध में एक पूर्व सांसद श्रीमती सरोजनी महिषी का प्रसंग यहाँ उद्धृत करना मुझे उचित प्रतीत हो रहा है। एक बार उनसे एक व्यक्ति से यह पूछा था–"आप अंग्रेज़ी में भाषण क्यों नहीं देतीं ? यह तो एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। आपकी मातृभाषा कन्नड़ है। फिर भी आप हिन्दी में ही क्यों बोलती हैं ?" उत्तर में उन्होंने कहा था–"मैं भारत माता की बेटी हूँ तथा हिन्दी इसी माँ की भाषा है। अंग्रेज़ी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा नहीं है। यदि है तो भी इसका प्रयोग नहीं करूंगी क्योंकि मेरी माँ चाहे कितनी भी निर्धन, अशक्य, असमर्थ, लूली व लंगड़ी क्यों न हो, मैं उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता।"

स्वाभिमान व राष्ट्रीय प्रेम का यह अत्युत्तम आदर्श है। एक विदेशी भाषा के मानसिक दासों को इससे शिक्षा लेनी चाहिए।

हिन्दी १४ सितम्बर १९४९ को राष्ट्रभाषा के रूप में जब मान्यता प्राप्त कर पाई थी तो उसका मुख्य कारण था–उस समय का प्रबलतम् रूप से प्रचण्ड जन समर्थन। उस समय अंग्रेज़ी को त्यागने व हिन्दी को स्वेच्छा से अपनाने को सम्पूर्ण राष्ट्र तैयार था। इस समर्थन को तैयार करने में अहिन्दी भाषी महापुरुषों व राष्ट्रभक्तों का पुरुषार्थ मुख्य कारण था। गुजराती मातृभाषी महर्षि दयानन्द सरस्वती व महात्मा गांधी, मराठी मातृभाषी काका कालेकर व बाल गंगाधर तिलक, पंजाबी मातृभाषी स्वामी श्रद्धानन्द, बंगला मातृभाषी केशवचन्द्र सेन, सुभाषचन्द बोस व रविन्द्रनाथ टैगोर, तमिलनाडू के सुब्रह्मण्यम भारती, कर्णाटक के भालचन्द्र शेट्टी व केरल के डॉ. एम. जी. के. मेनन व शंकर करूप आदि अनेक अहिन्दी राष्ट्रभक्तों ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया व इसका यशोगान किया है। संविधान निर्मात्री सभा में जब राष्ट्र भाषा का निर्णय करने का अवसर आया तो हिन्दी का प्रस्ताव अनन्त शयम अयंपार ने तथा इसका समर्थन हरे कृष्णा मेहताब (ओडिशा निवासी) ने किया था। राजगोपालचार्य सन् १९३६ ई. में जब मद्रास (=वर्तमान तमिलनाडू) के मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने वहाँ हिन्दी की पढ़ाई अनिवार्य कर दी थी। ऐसे और भी तथ्य हैं जो अहिन्दी भाषियों द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के अभियान में उनके योगदान के प्रमाण हैं परन्तु संविधान द्वारा आश्वस्त होने पर भी हिन्दी पूरे राष्ट्र की राजभाषा क्यों न बन पाई ?

मेरे विचार में इसके दो कारण मुख्य हैं। एक हिन्दी भाषियों की निष्क्रियता व राष्ट्रविरोधी शक्तियों का दुष्चक्र। डॉ. रघुवीर व मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद के मध्य एक संवाद का वर्णन इस लेख में किया जा चुका है। एक दूसरी घटना भी उद्धृत करना अपेक्षित है। जब राष्ट्रभाषा के रूप

thearyasamaj.org

में हिन्दी के अनुमोदन का प्रश्न रखा गया था तो तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था–"भारत के सभी संसद सदस्य अपने–अपने राज्यों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, अतः उन्हें पुनः–पुनः राष्ट्रभाषा के विषय में विचार करके ही समर्थन करना होगा अन्यथा भविष्य में उनकी मातृ भाषा का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण होने पर मान्य न हो सकेगा।" यह अहिन्दी भाषी प्रान्तों को हिन्दी के विरुद्ध खड़ा करने का अप्रत्यक्ष व गुप्त संकेत था। इन्हीं नेहरू जी ने कालान्तर में यह भी कहा था–"हिन्दी किसी पर थोपी न जाएगी।" जब तक एक भी राज्य हिन्दी का विरोध करेगा, अंग्रेज़ी चलती रहेगी।" उनका यह कथन सदैव के लिए हिन्दी विरोध का प्रमुख अस्त्र बन गया है। तब हिन्दी–विरोध का एक भी स्वर भारत में सुनाई न पड़ रहा था। सभी के मन में हिन्दी के प्रति विश्वास व निष्ठा थी। दुःखद आश्चर्य तो यह रहा कि तब संसद के अत्यधिक बहुमत पक्षीय हिन्दी मातृभाषा व अहिन्दी भाषी हिन्दी समर्थक वर्ग ने प्रधानमन्त्री से यह नहीं पूछा कि आपको घोषणा के अनुसार हिन्दी तो किसी पर थोपी न जाएगी किन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्थान पर पूरे देश पर विदेशियों द्वारा थोपी उनकी भाषा अंग्रेज़ी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी क्यों थोपी जाती रहेगी ?

सन् १९६५ ई. का वर्ष जब आने वाला था, तब हिन्दी का राज्याभिषेक होना था क्योंकि संविधान में यह वचन दिया गया था कि १५ वर्षों के पश्चात् हिन्दी राजभाषा के रूप में अपनाई जाएगी। वनवास काल पूरा होने से एक वर्ष पूर्व ही संविधान में परिवर्तन करके घोषणा कर दी गई कि अंग्रेज़ी तब तक द्वितीय राजभाषा के रूप में जारी रहेगी जब तक सभी राज्यों की विधान सभाएँ व संसद के दोनों सदन हिन्दी को पूर्णतः लागू करने के प्रस्ताव पारित नहीं करेंगे। यह कैसा लोकतन्त्र है जिसमें सर्वसम्मति से राजभाषा का निर्णय करने की परम्परा आरम्भ की गई थी ? इस प्रस्ताव को पारित कराने वालों से यह बात पूछने का जनता को पूर्ण अधिकार है कि देश का कोई एक भी प्रधानमन्त्री निर्वाचित होने से पूर्व क्या सभी विधानसभाओं व संसद के दोनों सदनों द्वारा प्रस्ताव पारित किए गए थे या केवल लोकसभा में बहुमत के नेता होने के कारण ही उन्हें निर्वाचित किया गया है ? लोकतन्त्र में सर्वसम्मति से निर्णय करने का नियम हिन्दी पर ही क्यों लागू किया गया ?

इस अपराध के लिए हिन्दी प्रान्तों के नेता अधिक दोषी हैं जो निष्क्रिय व मौन रहे। पूर्वोक्त संशोधन केन्द्र सरकार पर लागू होता है। हिन्दी भाषी प्रान्त व उनकी जनसंख्या देश का लगभग ५० प्रतिशत भाग है। यदि ये पूरी निष्ठा तथा दृढ़ सक्रियता से अपने यहाँ निम्नलिखित व्यवस्था कर लेते तो अंग्रेज़ी का देश पर स्थापित साम्राज्य स्वतः ढीला होता जाता :–

१. अपने यहाँ सम्पूर्ण राजकाज हिन्दी में शुरू करते।
२. केन्द्र व सभी प्रान्तों से सम्पूर्ण पत्राचार हिन्दी में आरम्भ करते।
३. हिन्दी एक प्रादेशिक तथा संस्कृत भाषा की पढ़ाई अनिवार्य की जाती।
४. अपने प्रान्तों में अंग्रेजी की पढ़ाई की अनिवार्यता समाप्त करके अंग्रेजी, फ्रैंच, चीनी या जर्मनी आदि भाषाओं में से किसी एक विदेशी भाषा की पढ़ाई वैकल्पिक की जाती।

हिन्दी प्रान्त यदि ऐसी व्यवस्था कर लेते तो इससे सभी अहिन्दी भाषी प्रान्तों तथा केन्द्र को हिन्दी का महत्त्व लाभ व अनिवार्य प्रबन्ध करना अनुभव होता। उन्हें विश्वास हो जाता कि हिन्दी को आधे देश ने जब अपना लिया तो इसके बिना हम लगभग आधे देश से विमुख हो जाएंगे। वे भी हिन्दी को पूर्णतः अपना लेते। अंग्रेज़ी न हिन्दी भाषियों ने त्यागी, न ही अहिन्दी भाषियों ने हटाई। हिन्दी प्रान्तों की तरह अहिन्दी प्रान्तों को भी इस कार्य में एक समयबद्ध कार्य योजना बनानी चाहिए थी :–

१. बच्चों की पढ़ाई का माध्यम मातृभाषा ही हो। हिन्दी व संस्कृत अनिवार्यतः दूसरी व तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जातीं।
२. फ्रैंच, जापानी, अंग्रेज़ी, चीनी तथा जर्मनी आदि में से कोई एक विदेशी भाषा का ज्ञान वैकल्पिक उच्च श्रेणी व्यवस्थित होता, न कि अंग्रेज़ी की ही अनिवार्य पढ़ाई कराई जाती।
३. अहिन्दी प्रान्तीय सरकारें अपना समस्त राजकाज अपनी प्रान्तीय भाषा में करतीं परन्तु हिन्दी प्रान्तों की सरकारों व केन्द्र सरकार से पत्राचार हेतु केवल हिन्दी को ही माध्यम बनातीं।

हिन्दी प्रान्तों ने ही जब हिन्दी, संस्कृत व अहिन्दी प्रान्तीय भाषाओं को ईमानदार निष्ठा तथा समर्पित दृढ़ सक्रियता से नहीं ग्रहण किया तो अहिन्दी प्रान्तों से कैसी शिकायत ?

मनुष्य को अधिक से अधिक भाषाएँ पढ़नी चाहिए, इसका विरोध हम नहीं करते परन्तु किसी भाषा को सब पर थोपना मानवता व लोकतन्त्र के किसी मानदण्ड की माँग नहीं। दार्शनिक विद्वान् पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि हरिवंशराय बच्चन आदि ने अंग्रेज़ी साहित्य की कई रचनाओं का अनुवाद हिन्दी में किया था तथा भारत के हिन्दी पाठकों ने अंग्रेज़ी के रचनाकारों बर्नाड शॉ, शेक्सपीयर, कीट्स व बर्डस्वर्थ आदि की साहित्यिक कृतियों का आनन्द भी लिया। विदेशी भाषा की रचनाओं का साहित्यिक स्तर पर स्वाद लेना असंगत नहीं परन्तु मातृभाषा व राष्ट्रभाषा की

thearyasamaj.org

उपेक्षा व त्याग करके दैनिक जीवन के प्रत्येक स्तर पर विदेशी भाषा, वह भी विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा थोपी गई भाषा को गले लगाए रखना स्वाभिमान, राष्ट्रीय एकता व सद्भावना के मान्य मानदण्डों के सर्वथा प्रतिकूल है। मातृभाषा में दी गई शिक्षा बालक के लिए सहज ही ग्राह्य होती है। दूर देश की भाषा का मानसिक बोझ हमारे देशवासियों ने उन्नति के साधन के रूप में स्वीकार कर लिया है तथा यह देश अंग्रेज़ी बिना अब नहीं जी सकेगा, यदि इस कथन की परीक्षा लेनी हो तो तुरन्त अंग्रेज़ी की हर स्तर पर अनिवार्यता समाप्त करके देखिएगा, हर स्तर पर मातृभाषा, राष्ट्रभाषा या अंग्रेज़ी में से किसी एक भाषा को चुनने का लोकतान्त्रिक व राष्ट्रीय अधिकार प्रजा को देकर परीक्षण करिएगा। अंग्रेज़ी को पांच प्रतिशत लोग भी नहीं अपनाएंगे–शर्त यह है कि जितना समय व जितने साधन व उपाय अंग्रेज़ी की शोषणकारी जड़ें जमाने के लिए प्रयोग किए गए हैं, उनके पांच प्रतिशत भाग का प्रयोग मातृभाषाओं व राष्ट्रभाषा के प्रयोग हेतु ईमानदारी से किया जाए। आवश्यकता है, सभी भारतीय भाषाओं के लेखक, समाजशास्त्री व राष्ट्रचिन्तक मिलकर राजनेताओं से स्पष्ट कह दें कि भाषा के विषय में निर्णय लेने का अधिकार भाषा–शास्त्रियों का है, तुम्हें नहीं है क्योंकि राजनेता तो कोई भी निर्णय अपने–अपने वोट–बैंक के आधार पर ही करते हैं।

गणेश आकृति के सन्देश

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

गणेश चुतर्थी आने पर सब ओर गणेश जी की महिमा का गुणगान होता है। अंग्रेजों के विरूद्ध जन आन्दोलन खड़ा करने के लिए श्री बाल गंगाधर तिलक ने १८९३ ई. में उत्सव को सार्वजनिक रूप में मनाये जाने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इस से पूर्व महाराष्ट्र में यह उत्सव घरों तक सीमित था। इसके साथ तिलक जी ने पैसा फण्ड चलाया, जिस से धन भी इकट्ठा हुआ। इस तरह तिलक जी ने लोगों को संगठित करने में असफलता पाई तथा इन दो बातों के सहारे एक बड़ा जन–आन्दोलन अंग्रेज़ों के विरूद्ध खड़ा कर दिया। अंग्रेज़ इसी लिए तिलक जी को सबसे अधिक खतरनाक नेता मानते थे। भाद्रपद की चतुर्थी ही गणेश चतुर्थी कहलाती है। प्रश्न उठता है कि तिलक जी ने इस उत्सव को क्यों चुना ? पौराणिक गणेश जी को कई नामों से पुकारते हैं जैसे सिद्धि विनायक, विघ्नहर्ता, मंगलकारी इत्यादि। ये नाम उन के गुणों के कारण हैं। गणेश नाम का अर्थ गणों का स्वामी होता है, जो शिव हैं। परन्तु गणेश पूजा के पीछे यह धारणा कार्य करती है कि इससे सुख, सौभाग्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है। जीवन की सब बाधाओं का अंत होता है और जो भी कार्य इस पूजा से आरम्भ होते हैं वे निर्विघ्न होते हैं। विश्वास की बात है। इसी लिए अधिक से अधिक लोग गणेश जी की पूजा करते हैं। यदि एक दिन की पूजा से इतने लाभों की प्राप्ति होती है तो कोई इस अवसर को क्यों छोड़े ? तिलक जी ने इस बात को भांपा। इस के पश्चात् इस उत्सव का विस्तार होता गया। दिन प्रतिदिन इस के अनुयाईयों की संख्या बढ़ती गई। आज देश के हर बड़े शहर में गणेश उत्सव मनाया जाता है।

गणेश जी की मूर्ति को देखकर, इस वैज्ञानिक युग में, प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कभी ऐसा सम्भव हुआ होगा कि सिर कटने पर मानव धड़ के ऊपर गज मुख लगा दिया गया हो। गणेश जी की मूर्ति प्रतीकात्मक है जिस से सभी को सन्देश मिलता है। उन के जन्म और प्रथम पूज्य बनाने की कहानियों से समाज में शिष्टाचार बताया जाता है। समाज ने उनसे मिलने वाली शिक्षा को तो भुला दिया और आडम्बरों को अपना लिया। उन प्रतीकों को समझने और सन्देशों को अपनाने में समय कहां ? मनन और चिन्तन कौन करे ? उन का बड़ा सिर इस बात का द्योतक है कि मानव का ज्ञान विस्तृत होना चाहिए। उसे चिन्तन तथा मनन करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति जो अपने कार्य आरम्भ करने से पूर्व हर पहलू बारे विचार करते हैं, उनके कार्य निर्विघ्न समाप्त होते हैं तथा उद्देश्यों की पूर्ति होती है। बड़े कान इन बात का सन्देश दे रहे हैं कि हमें आप–पास होने वाली बात या घटना की जानकारी होनी चाहिए। समाज में होने वाली चर्चाओं से हमें बेखबर नहीं होना चाहिए और बड़ा पेट हमें बता रहा है कि हमें बातों को पचाने की भी शक्ति होनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति अच्छे नहीं होते जो जब तक किसी बात को दो–चार से न कह दें तब तक उन का पेट फूला रहता है या उन के पेट में पीड़ा रहती है। इन दो अंगों से ये भी सन्देश मिलता है कि हमें सब की बात सुननी चाहिए। यदि कोई हमें अपना रहस्य बताना है तो हम में इतना धैर्य होना चाहिए कि उस की बात पचा सकें। उसका विश्वास टूटना नहीं चाहिए। लम्बी सूण्ड इस बात की द्योतक है कि हमें अपने विरूद्ध होने वाले किसी षडयन्त्र की जानकारी मिले तो सतर्क होना चाहिए। जैसे गजराज सूण्ड उठा–उठा कर चलते समय गन्ध लेता रहता है। हाथी की सूण्ड इतनी बलशाली होती है कि पेडों को वह उखाड़ फैंकता है और धरती पर पड़े पत्ते को भी उठा सकता है। हम में छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा काम करने की क्षमता होनी चाहिए। चार हाथ बता रहे हैं कि हमारी कार्यशक्ति अद्भुत होनी

thearyasamaj.org

रहा है। सामाजिक व शैक्षणिक दृष्टि से सुधार लाने और देश को स्वतन्त्र कराने में इस अद्‌भुत आन्दोलन के प्रणेता समाज की स्थापना वेदों के प्रकांड पंड़ित तथा महान् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द ने आज से १३६ वर्ष पूर्व १० अप्रैल १८७५ को मुम्बई में काकड़वाड़ी नामक स्थान पर की थी।

आज के भौतिकवादी युग में देश को आर्य समाज जैसे क्रांतिकारी संगठन की आवश्यकता है क्योंकि आर्य समाज ऐसी संस्था है जिसके रक्त में शुद्ध स्वर्णयुक्त आर्य रक्त का प्रवाह हो रहा है जो मनुष्य के अध्यात्मिक जीवन को निखार सकता है। स्वामी दयानन्द जी ३० अक्टूबर, १८८३ को चिरनिद्रा में विलीन हुए। वेद ज्ञान के इस सूर्य ने स्वयं अस्त होकर भी करोड़ों तारावलियों को जगमग कर दिया। आर्य समाज रूपी यह संस्था जो महर्षि देव दयानन्द हमें धरोहर में दे गये हैं हमें उनके जलाये दीपक में स्वयं तेल बनकर उसकी लौ को बढ़ाना है। जिससे यह भारत और विश्व में प्रकाशित होती रहे। अगर प्रत्येक आर्य इस दायित्व को पूर्ण रूप से निभाए तो यह देश और आर्य समाज कितना सुख–धाम बन सकता है तभी हम "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का जो जय घोष स्वामी दयानन्द जी ने दिया है, उसे साकार कर सकें क्योंकि विश्व शान्ति, एकता और अखंडता का आधार आर्य समाज ही है। यह तभी संभव हो सकता है जब हम अपने संगठन को मजबूत करने हेतू यह प्रण करें कि जीवन में स्वयं की उन्नति करेंगे लेकिन औरों को भी साथ लेकर उठेंगे। अन्त में परमपिता परमात्मा से यह मनोकामना करता हूँ कि मण्डी आर्य समाज एक सुदृढ़ एवं निष्ठावान समाज बने तथा अपने विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर रहे।

ऐसी औलाद से बेऔलाद भले

♦खेम सिंह सेन

भारतवर्ष एक धार्मिक आस्था वाला देश है, जिसमें रहने वाले लोग पितृभक्ति को भगवान तुल्य भक्ति समझते थे। इतिहास गवाह है राम ने पिता वचनों के पालन हेतु १४ साल वनवास काटा था। श्रवण कुमार ने अपने अंधे माँ–बाप को कंधों पर घुमाया था। धार्मिक ग्रंथ गवाह हैं कि पितृऋण मुक्ति हेतु पितृभक्ति आवश्यक है, परन्तु कलियुग के प्रभाव से पितृभक्ति को ग्रहण लग गया है। आज अधिकतर कलियुगी औलादें माँ–बाप के लिए वरदान के स्थान पर अभिशाप बनती जा रही हैं। हर माँ–बाप बड़े अरमानों से अपनी औलाद का पालन–पोषण करते हैं। कई कठिनाईयों का सामना करते हुए अपने बुढ़ापे को औलाद के हाथ सुरक्षित करने हेतु सारी आयु प्रयत्नशील रहते हैं। आज कलियुग में दो प्रकार की औलाद देखी जा सकती है। प्रथम प्रकार की औलाद में वे लोग आते हैं, जो माँ–बाप की कमाई का सदुपयोग करते हुए मेहनत करके पढ़ते हैं और उच्च पदों पर आसीन हो जाते हैं। दूसरी श्रेणी में निकम्मे निठल्ले आते हैं, जो माँ–बाप की कमाई को पढ़ाई के नाम पर गंवाते हैं। खर्चीला स्वभाव बन चुका होता है, बाद में चोर, डाकू, लुटेरे बनने पर विवश होना पड़ता है। आज माँ–बाप दोनों तरह की औलाद से अधिकतर दुःखी हैं। उच्च पद पर आसीन व्यक्ति की शान पर माँ–बाप का बुढ़ापा धब्बा समझा जाता है। अतः उनका बुढ़ापा अपने रहम या नौकरों के हाथ चला जाता है। माँ–बाप से बात करना शान के खिलाफ है। माँ–बाप का दिया बचपन में प्यार उन्हें भूल चुका है। धन के नशे में मदहोश क्या जानें पितृभक्ति क्या है ? दूसरी प्रकार की औलाद से आज माँ–बाप का जीना नरक सा दिख रहा है। औलाद की कोई न कोई वारदात नित्य प्रति दुःखों को बढ़ाती रहती है। अतः अधिकतर बुजुर्गों का बुढ़ापा नरक जैसा बनता दिखाई दे रहा है। इसमें किसी का दोष नहीं, सब कलियुग का प्रभाव है। यदि दोनों बुजुर्ग जीवित हैं, तो थोड़ा बहुत समय निकल जाता है यदि कहीं साथ छूट गया, तो इस कलियुग में भूखे मरने के अतिरिक्त क्या चारा है ? क्या माँ–बाप को अपनी औलाद से कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए ?

"हिन्दी"-इनकी नज़र में

♦रेनू माथुर, डी. ए. वी. सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल, मण्डी

१. हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरल स्त्रोत है।
–सुमित्रानंदन पन्त

२. मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्ज़त करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्ज़त न हो ये नहीं सह सकता।
–विनोवा भावे

३. हिन्दी का प्रचार राष्ट्रीयता का प्रचार है।
–पुरूषोतम टण्डन

४. हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है। –राहुल सांस्कृत्यान

५. एक दिन हिन्दी विश्व की पंचायत में अहम् भूमिका अदा करेगी। –गणेश शंकर विद्यार्थी

६. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। –महात्मा गांधी

७. मेरा दृढ विश्वास है कि हिन्दी सम्पर्क भाषा बनकर रहेगी।
–वी. वी. गिरि

thearyasamaj.org

हास्य विनोद

♦रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश

हसामुदाः स्त गृहाः (अ. ७.६०.६)

हे गृहस्थियो, हास्य विनोद से युक्त होवो।

संसार में जितनी भी योनियां हैं उन सब में मनुष्य की ही ऐसी योनि है जिसमें हंसना निहित है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी हंस नहीं सकता, न ही मुस्कुरा सकता है। क्रीड़ा तो मनुष्येतर अन्य अनेक प्राणियों में भी है किन्तु हास्य और विनोद मनुष्य के हिस्से में आया है।

विधाता ने मनुष्य के मुख की रचना पुष्प के समान की है। सदा हंसने और मुस्कुराने वाला मनुष्य उस पुष्प के समान है, जो सदा खिला रहता है और सब के मन को मोहता रहता है। गृहस्थियो, फूल बनो, शूल मत बनो। फूल के समान हमेशा हंसते रहो।

पुष्प के समान प्रसन्न वही रह सकता है, जो पुष्प के गुणों से अपने को सुभूषित कर लेता है। पुष्प में दो ऐसे गुण हैं, जिसके कारण पुष्प सदा खिला रहता है। वे दो गुण है सुगन्धि और मिठास। पुष्प में अन्तःकरण में सुगन्धि और मधु सन्निहित हैं। इसी कारण वह सदा खिला रहता है। आप भी अपने अन्तःकरण में सुगन्धि और मधु का आह्वान कीजिए। ईर्ष्या–द्वेष, निंदा, विकार वासना, मानव के अन्तःकरण को दुर्गन्धि से भर देती है। इनसे हमेशा दूर रहकर जो अपने अन्तःकरण में सत्य, स्नेह, श्रद्धा, विमल विचार और निर्मल आचार का आधान करता है, उसके अन्तःकरण में सुगन्धि और मधुरता का निवास होता है।

जिन के अन्तःकरण में सुगन्धि और मधुरता का निवास होता है, वे ही जन पुष्प के समान सदा प्रसन्न रहते हैं। वे ही सदा मुस्कुराते और हंसते रहते हैं। ऐसे ही जन विनोदशील होते हैं। स्वभाव बनाने से बन जाता है। प्रयत्नपूर्वक घरों के वातावरण को ऐसा बनाइये और घर के सब सदस्यों की प्रकृति का ऐसा निष्पादन कीजिए कि वे हास्ययुक्त और विनोदशील बन जायें।

हास्य और विनोद से गृहस्थी का घर सुखधाम, स्वर्गधाम, आनन्दधाम बनता है। जिस घर में हास्य और विनोद नहीं है, वह घर नरकधाम है, दुःखधाम है।

आइए अपने घर को आनन्द धाम बनाने का सदा प्रयत्न किया करें।

कर्म करने की स्वतन्त्रता

♦खुशहाल चन्द आर्य, कोलकता

ईश्वर ने मनुष्य को यदि कोई सबसे बड़ी उपलब्धि, पुरस्कार या वरदान दिया है तो वह है कर्म करने की स्वतंत्रता। साथ ही उसे नियंत्रण में रखने के लिए कर्मों का फल देना अपने हाथ में रखा है। यानि मनुष्य कार्य करने में स्वतन्त्र और फल पाने में ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार निष्पक्ष भाव से, बिना किसी भेद–भाव को रखे अच्छे का सुख के रूप में और बुरे का दुःख के रूप में फल देता है। मनुष्य भोग योनि के साथ–साथ कर्म योनि भी है इसीलिए उसको कर्म करने की स्वतन्त्रता मिली है। मनुष्य जैसा भी शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसका फल ईश्वर सुख दुःख के रूप में इसी जीवन में या अगली योनि में भेज कर देता है।

ईश्वर द्वारा मनुष्य को बुद्धि, वाणी तथा दो हाथ विशेष दिए हैं :– ईश्वर ने मनुष्य को अन्य योनियों से बुद्धि अधिक दी है जिससे वह अच्छे, बुरे की जांच कर सके। वाणी विशेष दी जिससे वह अपनी बात दूसरों को समझा सके तथा कर्म करने के लिए दो हाथ दिए हैं जिससे वह शुभ कर्म करते हुए परोपकार कर सके और दान दे सके। इन तीनों का मनुष्य उपयोग भी कर सकता है और दुरुपयोग भी कर सकता है। कारण, मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। बुद्धि से मनुष्य वेदों का ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है जिससे वह अपने जीवन को मोक्ष प्राप्ति के लिए अग्रसर कर सकता है और इसी बुद्धि से चोरी व ठगी भी कर सकता है। वाणी से वेद व अन्य ज्ञान की पुस्तकें भी पढ़ा सकता हैं, और पढ़ सकता है और इसी वाणी से गाली व किसी की निन्दा भी कर सकता है। दो हाथों से मनुष्य किसी को मार भी सकता है और इन्हीं दोनों हाथों से किसी असहाय को सहारा भी दे सकता है। इसलिए मनुष्य का कर्त्तव्य है कि ईश्वर ने उसके अच्छे कर्मों के आधार पर मनुष्य योनि में भेजा है और वेदों में शिक्षा दी है कि "मनुर्भव" हे मनुष्य! तू मनुष्य बन, मानव बन, तू अच्छे संस्कारों से सुसंस्कारित होकर मनुष्य के गुणों को धारण करके सच्चा मानव बन। यानि तुमको ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया है, तू उनके अनुसार चलकर अपने जीवन को उन्नत करते हुए सफल बना और जीवन का जो अन्तिम लक्ष्य है, मोक्ष प्राप्त करना, उसे प्राप्त करने का जीवन भर प्रयत्न कर।

thearyasamaj.org

कौन कहता है हनुमान वानर थे

♦डॉ. राम प्रकाश शर्मा, रोहिणी, दिल्ली

वाल्मीकि रामायण मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के समय में ही विरचित आदि काव्य है। यह कथन विषय वर्णन के आधार पर विद्वानों के अभिमत में सत्य प्रतीत होता है।

हनुमान आदि महाकाव्य रामायण के एक अति महत्त्वपूर्ण प्रेरक पात्र हैं। रामायण में हनुमान विद्वान्, नीतिवान्, साहसी, विवेकशील, स्वामीभक्त, वाकपटु, परमब्रह्मचर्यव्रत धारी, असाध्य कार्यों को साध्य बनाने की कुशल क्षमता के प्रतीक स्वरूप हैं। इन्हीं गुणों की विषम परिस्थितियों में प्रत्येक मनुष्य को आवश्यकता होती है, इसीलिए उनके इन्हीं गुणों का ध्यान कर निरन्तर उपासना करने से धीरे–धीरे हनुमान एक पूज्य देव बन गए। यह गुण शाश्वत मूल्यों के आधार हैं, मानव मात्र को इन गुणों को अपनाना तो कठिन सा अनुभव हुआ। इसलिए उन्होंने अपने स्वल्प ज्ञान से वानर रूप में हनुमान की पूजा प्रारम्भ कर दी। उपासना जिसकी की जाती हैं, उस उपास्य देव के गुणों का गायन, स्तुति, प्रार्थना करने से वह स्तुत्य भाव अदृश्य रूप से हमारे अन्तःकरण को भी बल प्रदान करते है, जिससे उपासक और उपास्य के मध्य दैवीय तादात्मय भाव सम्बंध स्थापित हो जाता है।

उपासक हृदय की कितनी गहराई एवं प्रबल, एकचित, समर्पण की पराकाष्ठा से उपास्य के प्रति भक्तिभाव में लीन है, तद्नुसार ही उपासकों को लाभ प्राप्त होता है।

जाकी रही भावना जैसी प्रभू मूरती
देखी तिन तैसी।

हनुमान कोई वानर नहीं है। यह धारणा निराधार है, जो जन हृदयों में न जाने क्यों बैठ गई है। वह वानर जाति के विलक्षण संस्कृतज्ञ विद्वान् हैं जैसे की पहले हनुमान जी के विशेषण दिए जा चुके हैं। यह अद्वितीय गुण किसी वानर में पूर्णतः असम्भव हैं। हनुमान की अद्म्य क्षमता, ईश्वर भक्ति, सिद्धि सम्पन्न ब्रह्मचारी के रूप में उनके आदर्श चरित्र, दिव्य कार्य का परिचय श्रीकिष्किन्धा कांड एवं सुन्दरकाण्ड में सर्वोत्कृष्ट वर्णन पढ़ने को मिलते हैं।

लंका का जो परिचय रामायण में है वह हनुमान ने सीता जी का पता लगाकर लंका से वापस आने पर जो वर्णन किया है। यदि हनुमान वानर होते तो क्या वह ऐसा वर्णन कर पाते ? यदि वह विद्वान् संस्कृतज्ञ नहीं होते, तो लंका का इतना दिव्यतम उल्लेख कैसे कर पाते ? लंका नगरी का नाम लंका नामक राक्षसी के नाम पर था। जिसका प्रतापी राजा विद्वान् ऋषि पुत्र रावण था। जो अंहकार और चारित्रिक चंचलता के कारण सीता जी के हरण का दुष्कृत्य कर बैठा। राक्षस जाति के विनाश के लिए सम्भवतः विधि का यही विधान निश्चित हुआ होगा। इसलिए ऐसी घटना राम–रावण के जीवन में अप्रत्याशित रूप से घटी।

हनुमान की वैदुष्यपूर्ण वार्तालाप एवं अद्भुत रामभक्ति से प्रभावित होकर स्वयंप्रभा ने उनकी सहायता भी की तथा उनका अग्रिम मार्ग सफल हो, इसके लिए सद् परामर्श, सावधान रहने के सूत्र भी बताइए। स्वयंप्रभा की गुफा से बाहर भक्ति की। इससे प्रसन्न होकर स्वयंप्रभा ने कहा :–

एवमुक्ता हनुमता तापसी वाक्यमब्रवीत्।
जीवता दुष्करं मन्ये प्रविष्टेन निवर्तितुम।।

लंकायात्रा का वर्णन :–

उत्पपाताथ वेगेन वेगवान् विचरयन्।
सुपर्णमिव चात्मानं मेने कपिकुञ्जरः।।

तैयार होकर, मार्ग के विध्न–बाधाओं की कुछ भी परवाह न करते हुए वेगवान् हनुमान जी अत्यन्त वेगपूर्वक आकाश में उड़ने लगे। उस समय कपिश्रेष्ठ हनुमान जी ने अपने आपको गरूड़ के सामान समझा।

रामायण काल में छोटे–छोटे विमान Monoplanes होते थे। हनुमान जी ऐसे विमान द्वारा ही लंका गए थे "उत्पपात" रामायण काल का एक मुहावरा है, आजकल भी जब कोई धनाढ्य व्यक्ति वायुमान द्वारा यात्रा करता है तो समाचार पत्रों में छपता है "वह लन्दन के लिए उड़ गया।" क्योंकि समुद्र की विशाल दूरी को वायुयान के द्वारा ही पार करना सम्भव था।

हनुमान सिद्धि प्राप्त पुरुष हैं। उन्हें अष्ट सिद्धियाँ एवं नवनिधियाँ प्राप्त हैं इस कारण उन्हें सब प्रकार की सामर्थ्य प्राप्त है।

लंका में सीता का पता लगाते समय क्या–क्या तर्क हनुमान के चिन्तन में आए, उन्होंने किस प्रकार की राजनीति, कूटनीति आदि का प्रयोग कर सीता का पता लगाया और किसी के द्वारा पकड़ में नहीं आए जबकि लंका में पग–पग पर अद्भुत सुरक्षा व्यवस्था थी। उन्होंने अद्भुत वाक् चातुर्य से लंका की अधिष्ठात्री रक्षिका लंका से वार्तालाप किया, उसके कठोर व्यवहार का कितनी बुद्धिमत्ता से उत्तर दिया है।

हनुमान जी ने लंका के प्रवेशद्वार से प्रवेश नहीं किया। इसका मुख्य कारण पहरेदारों की दृष्टि से बचना था। दूसरा कारण जैसा कि महाभारतकार ने दिया कि–'अद्वारेण रिपोर्गेहं द्वारेण सुहृदो गहन' शत्रु के घर में तोड़–फोड़ करके

thearyasamaj.org

प्रवेश करे, द्वार से न जाए और मित्र के घर द्वार से प्रवेश करें। रावण शत्रु था, अतः हनुमान जी परकोटा फाँदकर लंका में प्रविष्ट हुए।

क्या इतनी ऊँची कूटनीतिक सूझ–बूझ कोई वानर कर सकता है ?

सुग्रीव के सचिव हनुमान से लक्ष्मण की बातचीत :–

विदिता नौ गुण विद्वन् सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव चावां मार्गानः सुग्रीवं प्लवगेश्वरम्।।

हनुमान से बातचीत के बाद श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा :–

सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमुपागतः।।

हे लक्ष्मण! ये उन वानरराज के मंत्री है जिनसे मैं स्वयं मिलता चाहता था, यह स्वयं ही मेरे पास आ गए हैं।

विस्तार न करते हुए–

हनुमान को केवल वानर मानना, हनुमान जी का अनादर है। उनके आदर्श जीवन, व्यवहार उच्च मानवोचित गुणों को जीवन का अंग बनाकर हनुमान की उपासना का सार्थक लाभ प्राप्त होगा।

धर्म का यथार्थ स्वरूप

♦शिवकरण दूबे 'वेदराही'शक्तिनगर, सोनभद्र, उत्तरप्रदेश

हर पदार्थ का निज स्वरूप एवं निश्चित धर्म होता है जिसमें उस तत्व या पदार्थ का अस्तित्व एवं सत्ता टिकी होती है। अग्नि का धर्म ज्वलनशीलता है। यदि अग्नि में यह ऊष्णता न हो तो वह आग नहीं राख हो जाएगी। इसी प्रकार मनुष्यमात्र का भी धर्म है, जिसे मानव धर्म कह सकते हैं। मानव धर्म का सामान्य अर्थ है–मनुष्य के वे गुण, कर्त्तव्य, विशेषताएँ जिससे उसकी शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास, प्रगति, कल्याण एवं उत्थान हो। 'यतो अभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः–महर्षि कणाद ऋषि दर्शन के वचन (१/१/२) से यही अर्थ ध्वनित् होता है जिसका अभिप्राय है–जिससे मनुष्य का लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हो, वह धर्म है। वस्तुतः धर्म मानव मात्र के द्वारा धारण करने वाले वे ज्ञानमय कर्त्तव्य, आचरण, नैतिक मूल्य एवं विधि सम्मत मर्यादाएँ हैं, जो मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं।'

इस सृष्टि में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो अन्य भोग योनियों से श्रेष्ठ ज्ञानपूर्वक जीवन–यापन करने में समर्थ है। महर्षि वेदव्यास कहते हैं ''गुह्यं ब्रहम तद् इदं ब्रवीमि नहि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि कश्चित्'' अर्थात् तुम्हें मैं एक रहस्यमय बात बताता हूँ कि मनुष्य से श्रेष्ठ इस सृष्टि में कुछ भी नहीं है। मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार यह है कि उसके विकास एवं उत्थान की जितनी संभावनाएँ है, वह अन्य प्राणियों को सुलभ नहीं है। वह अपने नैमित्तिक ज्ञान के कारण सदैव ज्ञान अर्जित करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। शास्त्रकार कहते हैं ''आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः। यह मानव जीवन दुर्लभ है। बड़े भाग मानुष तन पावा की उक्ति इसी तथ्य की और इंगित करती है। इस सृष्टि के रचयिता ने इस महान् जीवन के विकास एवं उत्थान के लिए ही उसे इतना विकसित मस्तिष्क दिया है, जिसमें ज्ञान अर्जन की असीम संभावनाएँ हैं। इसीलिए मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी मानव के कल्याणार्थ परमात्मा ने उसे सर्वज्ञानमय वेद का आलोक प्रदान किया है, जिसमें सम्पूर्ण जीवन के विकास धर्म का प्रतिपादन है। महर्षि मनु ने सृष्टि उत्पत्ति के साथ धर्म की उत्पत्ति का मूल कारण बताते हुए कहा है कि ''सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्–पृथक्। वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे'' (मानव धर्मशास्त्र अध्याय–प्रथम, श्लोक २१) अर्थात् परमात्मा ने सब पदार्थों के नाम और मनुष्य के लिए समस्त कर्मों का विधान वेद में किया। इस प्रकार धर्म मानव के लिए विहित एवं करणीय कर्मों का शाश्वत विधान है। वेद को अखिल धर्म का कोष बताते हुए मानव धर्मशास्त्र में परिभाषित करते हुए लिखा गया है कि वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्। आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च अर्थात् वेद और उन वेदों के पारंगत विद्वानों के द्वारा रचे गए शास्त्र अर्थात् वेदानुकूल ग्रन्थ, साधु पुरुषों का आचरण और ऐसे ही महात्माओं के आत्मा के अन्तः करण के अनुकूल सत्य धर्म के मूल कहे गए हैं। चारों वेदों में मानव के ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान के लिए विधि–निषेध पूर्वक उपदेश दिए गए हैं। वेदों में सभी सत्य विद्याएँ हैं। वेदों से ही सभी शास्त्रों का उद्भव हुआ है। वेदों का अध्ययन करके ऋषियों ने स्मृतियों, आरण्यक, उपनिषद, धर्मशास्त्र, दर्शन, शिक्षा, कल्प, योगशास्त्र, आयुर्वेद आदि ज्ञान के ग्रन्थों की रचना की। इसीलिए तो निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रं सनातनात्, सर्वज्ञानमयो हि सः, तथा वेदः चक्षुः सनातनम् आदि शास्त्र वाक्यों के प्रमाण हैं। वेद में जिन कर्मों की प्रेरणा की गई है, वही विधेय कर्म–धर्म कहलाते हैं। जिन कर्मों के त्याग का वेद में उपदेश है वही निषेध है और उनका

thearyasamaj.org

आचरण अधर्म है। जो वेद के अनुकूल है वह धर्म और जो वेद के प्रतिकूल है वह अधर्म है। वेद सब सत्य विद्याओं के आधार हैं। अतः गोस्वामी तुलसी दास ने रामराज्य का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है कि 'वर्णाश्रम निज–निज धर्म निरत वेद पथ लोग। चलहिं सदा पावहि सुखहि नहि भय शोक न रोग अर्थात् रामराज्य में जनमानस वेदानुकूल आचरण करती थी। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को वाल्मीकि ने 'वेदवेदांगतत्वज्ञः' तथा रामो हि विग्रहवान् धर्मः कहकर अभ्यर्थना की है। मर्यादापुरुषोत्तम राम धर्म के मूर्तिमान स्वरूप थे। इसीलिए तो राम का चरित्र धर्मप्राण, जनमानस में आचरण का प्रतिमान बना हुआ है।

धर्म के यथार्थ स्वरूप को न जानकर अनेक लोग धर्म के नाम से नाक–भौं सिकोड़ते हैं तथा अज्ञान के कारण धर्म के नाम पर स्वार्थवश फैलाए गए पाखण्ड, अनाचार, ढोंग, अंधविश्वास को धर्म मानकर अन्ततः धर्म से घृणा करते हैं। कुछ पाश्चात्य विचारकों ने धर्म को अफीम की गोली एवं नशे की संज्ञा देते हुए धर्म की इसीलिए निन्दा की कि उन्हें सच्चे धर्म का बोध नहीं था और वे वेदविरुद्ध स्वार्थी लोगों द्वारा प्रचारित पंथो, मजहबों को ही धर्म मानते थे। इतिहास साक्षी है अनेक मत–पंथों के अनुयायियों ने धर्म के नाम पर अनेक बार रक्त–पात एवं नाना गर्हित कर्मों को अंजाम दिया। किसी शायर ने क्या खूब कहा है–खुदा के बंदों को देखकर खुदा से मुन्किर हुई है दुनिया। कि ऐसे बंदे हैं जिस खुदा के वो खुदा कोई अच्छा खुदा नहीं है। वेद प्रतिपादित वैदिक–धर्म सार्वभौम एवं सर्वजन कल्याकारी है, जो विश्वामानव द्वारा आचरणीय एवं सबके कल्याण में समर्थ है। शाश्वत ज्ञान विधान के कारण उसे ''सनातन–धर्म'' कहते हैं कि जिसमें मानव मात्र के लिए उन्नति एवं विकास के सभी कल्याणकारी उपदेश निहित हैं। वस्तुतः सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को धर्म की संज्ञा दी गई है। मानव धर्मशास्त्र में धर्म के लक्षणों को प्रतिपादित करते हुए इन्हीं मूल्यों को प्रतिपादित किया गया है। ''धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।'' अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन का निग्रह, चोरी का परित्याग, शरीर की शुद्धि, मन एवं आत्मा की पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, विद्या, सत्य, अक्रोध धर्म के लक्षण हैं। उपर्युक्त लक्षणों वाले धर्म की परिभाषा से सिद्ध होता है कि धर्म श्रेष्ठ मानव मूल्यों, उत्तम कर्त्तव्यों की समष्टि का नाम है, जिससे मनुष्य की वैयक्तिक, सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति होती है। धर्म शब्द व्यापक अर्थों का वाचक है। जब हम कहते हैं–माता, पिता, भाई, पुत्र, गुरु, विद्यार्थी, शिक्षक, राजा, नागरिक का धर्म तो कर्त्तव्यपरक आचरण कहलाता है। जब हम कहते हैं–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, दया, परहित चिन्तन, शिष्टाचार, ब्रह्मचर्य धर्म है तो सदाचार संज्ञक हो जाता है। जब कहा जाता है कि अपराधी को दण्ड दो, तो धर्म न्यायपरक हो जाता है। जब कहा जाता है शौच, संतोष, जप, तप, ईश्वर–भक्ति धर्म है, तो धर्म अध्यात्मपरक हो जाता है। जब हम कहते हैं कि स्वाध्याय, योग, प्रार्थना करना धर्म साधनापरक हो जाता है। वस्तुतः मानव मात्र के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक प्रगति के जो उत्तम विधि–विधान एवं आदेश, उपदेश एवं कर्त्तव्य हैं वे सब धर्म के अन्तर्गत आते हैं। धर्म वह आचरणपरक जीवन शैली का आधार है, जिसके धारण करने वाले को सम्यक् ज्ञान, दर्शन, व्यवहार एवं संयम सिखा देता है। परहित चिन्तन एवं लोक कल्याण धर्म की भावना है। महान् पुरुषों के उत्तम आचरण धर्म है। धर्म न रंगीन कपड़ों में मिलता, न माथे पर लगे विभिन्न रंग के छापा तिलक में है, अपितु धर्म तो महापुरुष, सज्जन धर्मात्माओं के सुन्दर चरित्र में परिलक्षित होता है। धर्म मानवता की धूरी है, प्राण है, जीवन संजीवनी है, जिसके बिना मनुष्य में मनुष्यता नहीं आती। धर्महीन व्यक्ति तो पशुतुल्य है। भर्तृहरि कहते हैं, येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः। ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति। इस प्रकार धर्म जीवन–निर्माण की साधना है। मनुष्य कर्मशील प्राणी है। उसे जीवन में ज्ञान, धन, भोग एवं दुखों से मुक्ति प्राप्त करनी है। अतः भारतीय संस्कृति के सभी ग्रन्थों में सर्वत्र धर्म की शिक्षा व ज्ञान अनुस्यूत है। वेद तो विश्वमानव के लिए धर्म के साक्षात् प्रमाण हैं। वेद अनुमोदित सभी आर्ष ग्रन्थ यथा दर्शन, उपनिषदें, गीता, रामायण आदि सार्वभौम सत्यकर्मों की शिक्षा देते हैं। वस्तुतः धर्म की सम्पूर्ण व्यवस्था सत्य पर आधारित है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियम में कहा है कि ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।'' ''सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करना चाहिए।'' महर्षि ने सत्य और धर्म दोनों को एक ही माना है। शास्त्रकारों ने भी धर्म को सत्य पर आधारित बताते हुए कहा है कि नहि सत्यापरो धर्मो नानृतात्पातकं परम् अर्थात् सत्य से पृथक कोई धर्म नहीं तथा झूठ के समान पाप नहीं। अतः धर्म के सार्वभौम स्वरूप को जानने के लिए हमें वेद की शरण में जाना होगा क्योंकि धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः अर्थात् धर्म के जिज्ञासुओं के लिए वेद परम प्रमाण हैं।

thearyasamaj.org

समाचार

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के जिला मण्डी के प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य, दिव्य मानव ज्योति अनाथालय डैहर के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश शर्मा, जिला मण्डी के उपाध्यक्ष श्री लालमन शर्मा तथा बल्ह खंड के प्रधान श्री मंगत राम चौधरी ने सुन्दरनगर के वरिष्ठ पैंशनर श्री दीनानाथ शास्त्री तथा श्री बृज लाल शर्मा के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि श्री दीनानाथ शास्त्री तथा श्री बृज लाल शर्मा अत्यन्त मिलनसार, परोपकारी तथा समाजसेवी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में समाज के हर क्षेत्र में अनुकरणीय एवं विस्मरणीय कार्य किया है जिसे प्रदेश के पैंशनर कभी नहीं भुला पायेंगे। पैंशनर कल्याण संघ हमेशा उनके कार्यों को याद करता रहेगा। श्री दीनानाथ शास्त्री और श्री बृज लाल शर्मा सुन्दरनगर के अत्यन्त निर्भीक और निडर महापुरूष थे। उनके चले जाने से जो कमी अनुभव की जा रही है उसे भुलाया नहीं जा सकता। श्री दीनानाथ शास्त्री ६० वर्ष के और श्री बृज लाल शर्मा ८१ वर्ष के थे। दिवंगत आत्माओं की शांति और सद्गति के लिए पैंशनर कल्याण संघ द्वारा दो मिनट का मौन रखा गया एवं श्रद्धांजलि दी गई। प्रभु उन्हें अपनी व्यवस्था में सुखी रखे।

•हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य संरक्षक श्री सुमेधानन्द जी महाराज, प्रदेश मुख्य सलाहकार श्री सत्य प्रकाश मैंहदीरत्ता, उपाध्यक्ष श्री रोशन लाल बहल तथा रत्न लाल वैद्य, महामन्त्री श्री रामफल सिंह आर्य तथा आर्य वन्दना के सम्पादक श्री कृष्ण चन्द आर्य, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक श्री विनोद स्वरूप एवं श्री माया राम वर्मा ने पाकिस्तान के पेशावर प्रान्त में सैनिक स्कूल में हुए दुखदाई नरसंहार पर गहरा दुख व्यक्त किया जिसमें सैनिक स्कूल की नवीं कक्षा के एक बालक को छोड़ सभी बालकों को बन्दूकों से छलनी कर दिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश सभी दिवंगत आत्माओं की शांति और सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। प्रभु इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपनी व्यवस्था में शांति और सद्गति प्रदान करे। मृत आत्माओं के परिजनों को परमात्मा इस महान् क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ का राज्य सम्मेलन प्रदेश प्रधान श्री रमेश कुमार भारद्वाज की अध्यक्षता में ऊना में सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रदेश के पूर्व प्रधान एवं मुख्य संरक्षक श्री बी. डी.शर्मा मुख्यातिथि थे। इस अवसर पर ८० वर्ष से अधिक आयु के ५१ पधारे हुए बुजुर्गों को सम्मानित किया गया। इसमें सुन्दरनगर के श्री दयालु राम शास्त्री जी को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रदेश के सभी जिलों से पधारे हुए प्रधानों ने अपने विचार व्यक्त किये और सरकार से बुजुर्गों की दुखती रग पर अपनी सहानुभुति का मरहम लगाने का अनुरोध किया। इस अवसर पर जिला मण्डी के प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य ने प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह जी से अनुरोध किया कि वे ५,१० और १५ प्रतिशत पैंशनरों का भत्ता देने को पंजाब आधार पर मूल पैंशन में मिलाने की घोषणा करें ताकि बुजुर्गों को उसका लाभ मिल सके और यह भत्ता तथा उससे सम्बन्धित सभी लाभ पैंशनरों को प्राप्त हों। मुख्य संरक्षक श्री बी. डी. शर्मा ने पैंशनरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैं सभी एकता के सूत्र में बन्ध कर निकट भविष्य में संघर्ष के लिए तैयार रहें। कभी भी आन्दोलन की रणभेरी बज सकती है। इस हेतु हम सभी को एकता के सूत्र में बंध कर संगठन को मजबूत बनाना होगा। अंत में प्रदेश प्रधान श्री रमेश कुमार भारद्वाज ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि सरकार हम बुजुर्गों के साथ इन्साफ करे और पंजाब आधार पर सभी मांगों को देने की कृपा करे। इस अवसर पर पैंशनर कल्याण संघ जिंदाबाद के गगनभेदी नारे लगाए गये और सभी सदस्यों ने एकता के सूत्र में बंध कर कल्याण संघ को मजबूत करने का वचन दिया। अंत में प्रदेश अधयक्ष श्री रमेश भारद्वाज एवं समस्त कार्यकारिणी का सुन्दर एवं सुस्वादु भोजन हेतु धन्यवाद किया गया।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ के वरिष्ठ सदस्य श्री दिवाकर शर्मा का गत् दिनों अपने ग्राम नौलखा, सुन्दरनगर में अचानक देहावसान हो गया। वे मिलनसार, मृदुभाषी एवं परोपकारी व्यक्ति थे। पैंशनर समाज दिवंगत आत्मा की शांति और सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। प्रभु दिवंगत आत्मा के परिवार जनों को भी इस महान् क्षति को सहने की शक्ति और सार्म्थय प्रदान करे। आर्य वन्दना परिवार की ओर से श्री दिवाकर शर्मा के दुखद निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया।

–कृष्ण चन्द आर्य

"यदि हमारे कर्म ऊँचें होंगे तो हम मुक्ति पाएँगे, अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।"

–महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द के प्रति राष्ट्रीय नेताओं की श्रद्धांजलि

➲भारत की स्वाधीनता की नींव रखने वाले वास्तव में स्वामी दयानन्द ही थे।
—सरदार वल्लभभाई पटेल

➲मैं जहाँ–जहाँ गमन करता हूँ वहाँ–वहाँ मुझे दयानन्द के ही चरणार्विन्द दृष्टि गोचर होते हैं। —महात्मा गाँधी

➲स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मन्त्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान् नक्षत्र थे दयानन्द।
—लोकमान्य तिलक

➲राजकीय क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य करने वाले महर्षि दयानन्द महान राष्ट्रनायक और क्रान्तिकारी महापुरुष थे।
—लाल बहादुर शास्त्री

➲आधुनिक भारत के आद्यनिर्माता तो दयानन्द ही हैं। —सुभाष चन्द बोस

➲सत्य को ही अपना ध्येय बनायें और दयानन्द को अपना आदर्श बनायें।
—स्वामी श्रद्धानन्द

➲मेरा सादर प्रणाम उस महान् गुरु दयानन्द को जिनकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता के दर्शन किये।
—रविन्द्र नाथ टैगोर

➲हमारे विचार तथा मानसिक विकास अधिकांश आर्य समाज की देन हैं। —शहीद भक्त सिंह

➲मुझे स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक प्रेरणा महर्षि के ग्रंथों से मिली है।
—दादा भाई नैरोज़ी

➲मैंने राष्ट्र, जाति और समाज की जो सेवा की है उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है।
—श्याम जी कृष्ण वर्मा

➲महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्व प्रथम योद्धा थे। —वीर सावरकर

➲स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं उन्होंने हमें स्वतंत्रतापूर्वक विचारना, बोलना और कर्त्तव्य पालन करना सिखाया।
—लाला लाजपतराय

विश्व बन्धुत्व के दस नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं–उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामी, अजर–अमर–अभय, नित्य–पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उस की ही उपासना करने योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक–आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्ताव करना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न होना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।

साभार

सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री किशोरी लाल सैनी, निवासी रोपा, सुन्दरनगर ने ₹ ५००, श्री दुर्गा दत्त शर्मा, निवासी गांव क्यूरी, डा. नेहरा, तह. एवं जिला शिमला ने ₹ २०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में

बुक पोस्ट

11

स्व. लालबहादुर शास्त्री को एक श्रद्धांजलि (११ जनवरी, पुण्य तिथि पर)

♦प्रो. ओम कुमार आर्य, जीन्द, हरियाणा

प्राणों से भी प्यारी थी, तुमको भारत की माटी,
जिससे निर्मित गर्वीली मेवाड़ की हल्दी घाटी।
संकट की घड़ियों में तूने माँ की लाज बचाई,
तुझ फौलादी से टकरा कर शत्रु ने मुंह की खाई।
तेरे 'नैटों' की मार देखकर दंग रह गई दुनियाँ,
अमरीका तक ने दाबी थीं दांतों बीच अंगुलियाँ।
फिर बरसों बाद सुनी जग ने निर्भीक हुंकार तुम्हारी,
कायरता कर नहीं सकती शांति की पहरेदारी।
निस्तेज अहिंसा का राजकाज से कोई मेल नहीं है,
राजनीति है राजनीति, बच्चों का खेल नहीं है।
मूर्तरूप हुई तुझ में भारत की परम्परायें,
अंगड़ाई ले उठी पुनः चिर सुप्त वीर गाथायें।
तुझसे प्रेरणा पा सेना ने ऐसा इतिहास रचा था
'सैब्रजैट' और 'पेटन टैंक' का न कहीं निशान बचा था।
''आदेश दिया प्रतिरक्षा का जब सीमा के रखवालों को,
लाहौर बचाना मुश्किल हो गया दिल्ली लेने वालों को''
हे चाणक्य, हे रामचन्द्र, हे कृष्ण सुदर्शनधारी,
तुम्हें जन्म दे धन्य हो गई भारत जननी प्यारी।
अपनी सूझबूझ से तूने हिन्दू की निद्रा तोड़ी,
वर्तमान से भव्य अतीत की बिखरी कड़ियाँ जोड़ीं।
भारत के गौरव की तूने जग पर धाक बिठा दी,
देखे तुममें दुनिया ने गौत्तम, प्रताप शिवाजी।
तू सूरज था तम की काली चादर चीर उगा था,
सांझ कहां होने पाई तू बीच दोपहर छुपा था।
जनता से आया था तू जनता का सजग सिपाही था,
लाखों मांओं का बेटा था लाखों बहनों का भाई था।
तुमको खोकर भारत ने एक स्वर्णिम युग खोया है,
इसीलिये वह लुटा–लुटा सा फूट–फूट रोया है।।
संकट की घड़ियों में ये आकाश के चांद सितारे,
तेरा आह्वान किया करेंगे अपनी भुजा पसारे।
भारत की ओर यदि बुरी नीयत से कोई शत्रु आयेगा,
खड़ा जवानों के रूप में सरहद पे तुम्हें पायेगा।
जब तक बहेगी हिम गिरि से गंगा की निर्मल धारा,
तब तक अमर रहेगा 'बहादुर' प्रेरक नाम तुम्हारा।
तेरे पदचिन्ह अमिट रहेंगे क्रूर काल की छाती पर,
कृतज्ञ राष्ट्र याद करेगा आंखों में आंसू भर कर।।

हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ के मुख्य संरक्षक श्री बी. डी. शर्मा पैंशनर साथियों को सम्मानित करते हुए।